चाक का महत्व

उदय पाठशालाओं में चाक को एक कला कौशल के रूप में देखा गया है। जब चाक को धुमाया जाता है तो ऐसा लगता है जैसे बिना बिजली का पंखा घूम रहा हो। पंखा भी ऐसा की बस उस पर गीली मिट्टी रखो और हाथ लगाते ही जादू की तरह तरह–तरह की कलाकृतियाँ निकलने लगती हैं। सब कुछ चकित कर देने वाला होता है। देखते ही मन करता है कि हम भी कलाकृतियाँ बनाये।

इस कला को जानने के लिए मिट्टी को जानना जरूरी है। व्यक्ति को मिट्टी में हाथ डालने से पहले अपने पूर्वाग्रहों से मुक्त होना पड़ेगा। तभी आप ये आनन्द ले पायेंगे। अगर बच्चे मिट्टी से जुड़े रहते हैं तो उनमें इस तरह के पूर्वाग्रह पैदा ही नहीं होंगे और वे सदा मिट्टी को, मिट्टी से जुड़े लोगों को सम्मान की दृष्टि से देख पायेंगे।

अक्सर उदय के बच्चों को चाक पर काम करते देखकर लोग कहते हैं कि ''मास्टर जी बच्चों को कुम्हार बनाओगे क्या?'' उदय पाठशालाओं में चाक व्यवसायिक विषय के रूप में नहीं होकर एक कला के रूप में है जो लोग इस तरह के

सवाल करते हैं उनसे मेरा प्रश्न है कि सभी मुख्य धारा की स्कूलों में चित्रकला पर काम किया जाता है तो क्या ये सभी स्कूल बच्चों को चित्रकार बनायेंगे? नहीं यहाँ चाक या चित्र का काम किसी रोजगार की वजह से नहीं अपितु कला के रूप में करवाया जाता है। हम जब मिट्टी को पीसकर, गलाकर, गूंथकर तैयार करते हैं तो हमें पता चलता है कि इसमें कितनी मेहनत होती है। कितने धैर्य के साथ अपने स्वयं के हाथों के श्रम से उसे तैयार किया गया है। फिर उसे चाक पर रखकर सधे हुए हाथों से अपने मन की कलाकृति को मूर्त रूप दिया जाता है। इस प्रयास में यदि असफलता भी होती है तो कोई नुकसान नहीं होता। उस मिट्टी को फिर से चाक पर रखकर कोशिश की जा सकती है और जब वह मनचाहा रूप धारण करती है तो आप की सारी थकान मिट जाती है आप उसे सुखाते हैं और सूखने पर मन चाहे रंगो से उसे सजाते हैं। इस तरह एक बेजान मिट्टी से खूबसूरत कलाकृति बनने के सफर के आप साक्षी होते हैं। आप जान पाते हैं कि इस काम में सब कुछ भुलाकर लगातार ध्यान, लगन, मेहनत, समय, कौशल, कल्पना और सौन्दर्य का योग है। इस काम को जितना प्रेम और श्रद्धा से आप देखेंगे उतना दूसरा नहीं देख पायेगा।

कल्पना और सौन्दर्य की समझ जिसमें होगी वह इन्सान एक संवेदनशील प्राणी होगा। जो दूसरों के विचार और संवेदनाओं को समझ सकेगा। समता मूलक समाज बनाने के लिए बच्चों में संवेदनशीलता होना अनिवार्य है। ये बच्चे श्रम का महत्व समझेंगे और उसे सम्मान की नजर से भी देख पायेंगे। चाक हमारी संस्कृति और जीवन का अभिन्न अंग रहा है। इसका कुम्हार के रूप में व्यावसायिक महत्व कम हो गया है। परन्तु कला के रूप में इसका महत्व आज बढ़ गया है। यह कला हमें जमीन और मिट्टी से जोड़ती है।

चाक का महत्व

उदय सामुदायिक पाठशाला ग्रामीण शिक्षा केन्द्र